

फिश एक्वेरियम निर्माण से आमदनी

पवन कुमार शर्मा*, मधुसूदन कुंडू* और **शिशिर कुमार गंगवार***

"मछली एक्वेरियम एक जलीय प्राकृतिक सौन्दर्य का रूप है। इसमें एक छोटे से आयत, वर्ग या किसी अन्य आकृति में नदी, झील, समूह या किसी जलाशय का सौन्दर्य जीवित रूप में देख सकते हैं। एक्वेरियम का प्रयोग प्रशिक्षण एवं मछली की दुर्लभ प्रजातियों को संरक्षण देने तथा एक व्यवसाय के लिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें जल-मछली के अतिरिक्त अन्य जीवजन्तु भी रहते हैं, उन्हें भी एक्वेरियम में संजोया जा सकता है, जैसे-जलीय पादप आदि।"

एक्वेरियम एक पारदर्शी जल से भरी कांच की डिब्बेनुमा संरचना होती है और इसे अलग-अलग आकार एवं आकृति का बनाया जा सकता है जैसे आयताकार, वर्गाकार, त्रिकोण, पंचकोणीय आदि। एक्वेरियम विभिन्न आकृति के सांचों में पिघले हुए कांच को ढालकर विशेष प्रकार के बनाये जा सकते हैं।

प्रशिक्षण के लिए आयताकार एक्वेरियम बनाना बेहतर है। इसे जोड़ना तो आसान होता ही है साथ ही वैज्ञानिक तौर पर आयताकार एक्वेरियम में ऑक्सीजन अधिक मिलती है और मछलियों को धरातल के समानान्तर चलने-फिरने में आसानी होती है।

एक्वेरियम निर्माण के लिए आवश्यक सामग्री

- निश्चित नाप के कटे हुये कांच के टुकड़े।
- एक्वेरियम को ऊपर से ढकने के लिए प्लास्टिक या लकड़ी से बना हुआ ढक्कन, जिसमें बिजली का बल्ब या ट्यूबलाइट लगी हुई हो।
- विभिन्न आकृति के छोटे-छोटे रंगीन कंकड़ या पत्थर
- जल में ऑक्सीजन स्तर बढ़ाने के लिए एरेटर
- पानी को साफ करने के लिए वॉटर फिल्टर
- कृत्रिम एवं प्राकृतिक जलीय पादप।
- सिलिकॉन गम एवं गन
- फ्लोरोसेंट ट्यूबलाइट
- एक्वेरियम स्टैण्ड
- बैक ग्राउन्ड में लगाने के लिए रंगीन सिनरी
- कृत्रिम खिलौने
- तापमान निश्चित बनाये रखने के लिए थर्मोस्टेट
- सर्दियों में तापमान बढ़ाने के लिए हीटर
- तापमान नापने के लिए थर्मामीटर, आदि

एक्वेरियम की मछलियां

- गोल्ड फिश
- गप्पी फिश
- मौली फिश (बच्चे देने वाली मछली)
- प्लेटी फिश (बच्चे देने वाली मछली)
- ऐंजल फिश
- जेब्रा फिश
- इसोमस फिश
- रसबोरा या कैटफिश आदि

एक्वेरियम निर्माण

- एक्वेरियम साधारणत: आयताकार आकृति का बनाया जाता है। इसके लिए अलग-अलग अनुपात में कांच को काटा जाता है।
- एक्वेरियम बनाने के लिए पांच कांच

*कृषि विज्ञान केंद्र, माधोपुर, डा. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम चंपारण-845454 (बिहार)

के टुकड़े निश्चित अनुपात में काटे जाते हैं।

- सबसे पहले नीचे वाला कांच किसी समतल धरातल या टेबल पर रखकर सिलिकॉन गम की सहायता से उसके ऊपर पीछे का कांच चिपकाया जाता है।

एक्वेरियम प्रबंधन में सावधानियां

- 10 वर्ग इंच जलक्षेत्र में 1 इंच की मछली (लंबाई में पूंछ शामिल नहीं है) डालनी चाहिए।
- एरेटर व वॉटर फिल्टर (पॉवर फिल्टर, बॉटम फिल्टर, स्पंज, सादा फिल्टर, आदि) का उपयोग अवश्य करें, जिससे पानी साफ रहेगा व ऑक्सीजन स्तर सही बना रहेगा।
- लगभग 15 दिनों बाद एक्वेरियम व वॉटर फिल्टर की सफाई करना आवश्यक है।
- पानी का तापमान जांचने के लिए थर्मामीटर का प्रयोग करें। गर्मी एवं सर्दी में तापमान निश्चित रखने के लिए थर्मोस्टेट का प्रयोग करें।
- सभी उपकरणों की समय पर सफाई करना आवश्यक है। इन उपकरणों के इस्तेमाल से पहले इनको पोटेशियम परमागनेट में डुबोकर साफ पानी से धोकर फिर एक्वेरियम में रखना चाहिए, ताकि जीवाणु व अन्य रोगजनक पानी में न आयें।
- मछलियों को दिया जाने वाला आहार प्रोटीनयुक्त होना चाहिए। यह आहार निश्चित मात्रा व समय पर दिया जाना चाहिए।
- मछलियों के स्वास्थ्य का नियमित निरीक्षण करना आवश्यक है। यदि कोई मछली अस्वस्थ है, तो उसे तुरन्त बाहर निकालकर उपचारित करना चाहिए। यदि कोई मछली जल में मर जाती है, तो उसे तुरन्त बाहर निकाल दें।
- संबंधित विभाग में जाकर प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है।



एक्वेरियम की सजावट

- फिर दोनों तरफ वाले कांच सिलिकॉन गम की सहायता से चिपकाये जाते हैं।
- अंत में सामने वाला कांच चिपकाया जाता है।
- इसके बाद इसे कम से कम एक दिन के लिए सामान्य ताप पर या कमरे के तापमान पर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है जिससे कि शीर्ष आपस में चारों ओर से अच्छी तरह से चिपक जायें।
- दूसरे दिन एक्वेरियम में जल भरकर देखना चाहिए। यदि पानी किसी स्थान से लीक हो रहा है, तो एक्वेरियम को खाली करके उस स्थान पर सिलिकॉन गम को हल्का सा खुरचकर पुन: अच्छी तरह से सिलिकॉन गम लगाना चाहिए।
- अब इसे पुन: सुखाकर और जल भरकर जांच करनी चाहिए और यदि पानी लीक नहीं हो रहा है, तो समझिए एक्वेरियम तैयार हो गया।

एक्वेरियम की सजावट

एक्वेरियम की सजावट निम्न प्रकार से की जा सकती है:

- सबसे पहले एक्वेरियम के तल में विभिन्न आकृति के रंगीन कंकड़-पत्थर बिछा देने चाहिए।
- इसके बाद इन कंकड़ों के अन्दर कृत्रिम एवं प्राकृतिक जलीय पादप लगाते हैं। प्राकृतिक जलीय पादप (वेलिसनेरिया, हाइड्रिला, पोटेमोजीटोन, सिरेटोफिल्लम, माइरियोफिल्लम आदि) जल में प्रकाश संश्लेषण के जरिये ऑक्सीजन का स्तर बढ़ाते हैं। इसके साथ ही ये पादप मछलियों को छुपने का स्थान, आकस्मिक भोजन देने के अलावा एक्वेरियम की सुन्दरता को बढ़ाने का काम करते हैं।
- पौधे लगाते समय यह सावधानी रखें कि छोटे पौधे आगे की तरफ व लंबे पौधे पीछे की तरफ लगायें, जिससे एक्वेरियम की पूर्ण सुन्दरता का अवलोकन किया जा सके। प्राकृतिक पौधों को 12 से 16 सें.मी. की दूरी पर लगायें, जिससे इनको पनपने में आसानी रहेगी।
- अब इन कंकड़ों में खिलौने जैसे कृत्रिम मगरमच्छ, कृत्रिम चट्टान आदि लगायें। इसके साथ ही पानी में एरेटर की मदद से बुलबुले छोड़ने वाली पाइप भी कंकड़ों के नीचे दबा दें।
- अब एरेटर को पाइप से जोड़ दें व धीरे-धीरे किसी मग की सहायता से एक्वेरियम में पानी भर दें। इस एक्वेरियम को ऊपर से थोड़ा खाली रखें और इसके बाद इसमें वॉटर फिल्टर लगा दें। वॉटर फिल्टर एवं एरेटर दोनों को बिजली की सहायता से चालू कर दें। लगभग 24 घण्टे तक इनको चालू रखने से पानी साफ हो जायेगा व पानी में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ जायेगा।
- इसके बाद पानी में अलग-अलग तरह की रंगीन मछलियां डाल दें व ढक्कन लगा दें। इस ढक्कन में बल्ब लगा होता है, जो एक्वेरियम की खूबसूरती को देखने में सहायक होता है। इसके साथ फ्लोरोसेन्ट लाइट का प्रयोग कर सकते हैं। इस लाइट को पानी के अन्दर भी लगाया जा सकता है। यदि सर्दी का समय है, तो हीटर का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। मछलियों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए एक निश्चित तापमान को बनाये रखना आवश्यक है।

■